साहित्य–संगीत–कला को समर्पित

शब्दम्

चरण ४: २००७–०८

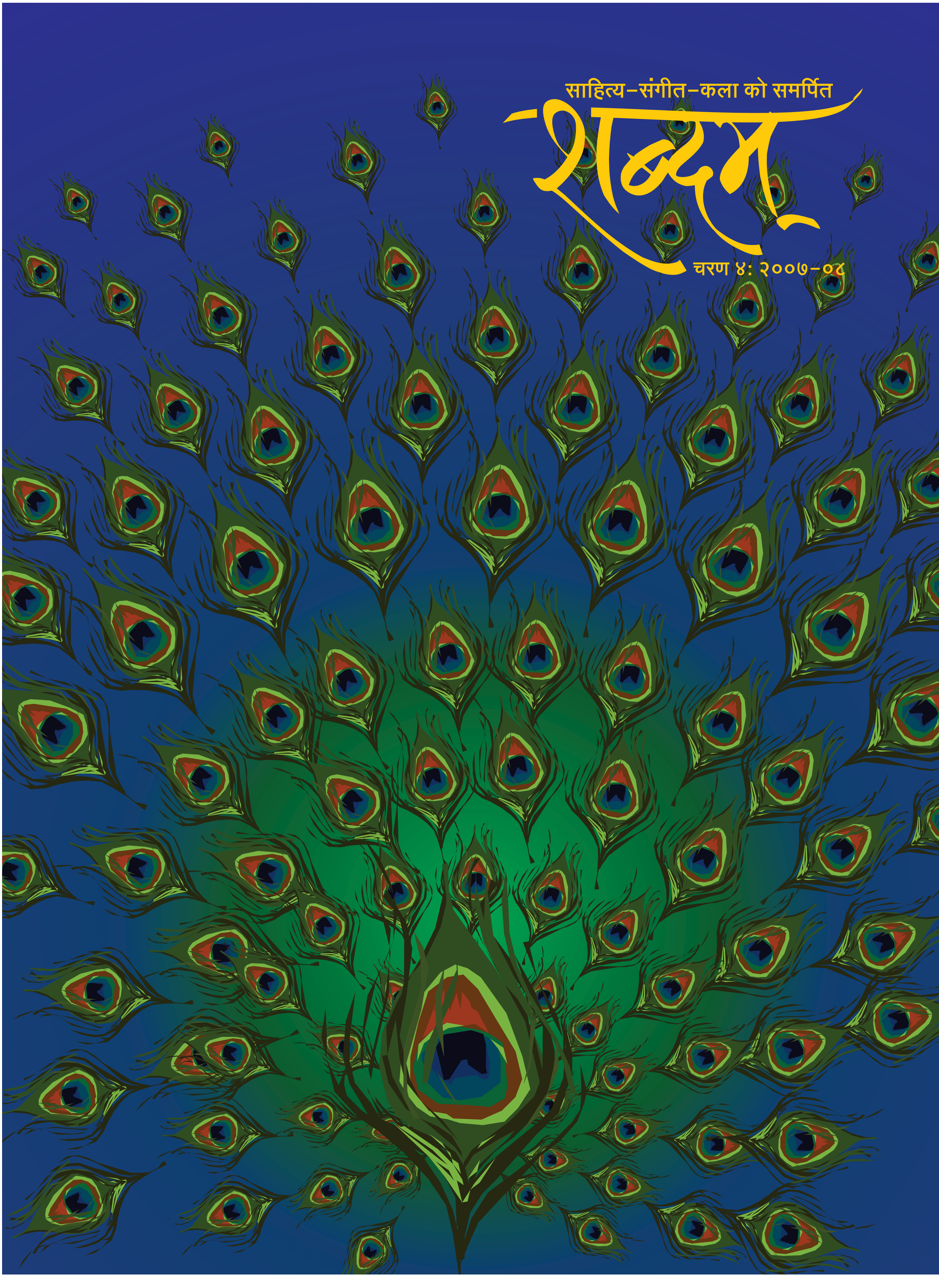

शब्द शक्ति की आराधना के लिए

'शब्दम' ध्वनि, नाद और अर्थ तीनों का सम्मिलित रूप है। इसके व्यापक क्षेत्र के अन्तर्गत विविध साहित्य-संगीत-कला स्वत: ही आ जाते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर माँ शारदा की कृपा से १७ नवम्बर २००४ को इस संस्था (शब्दम्) का गठन शिकोहाबाद (उ.प्र.) में हुआ।

उद्देश्य

१. हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं जैसे कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध आदि की उच्चस्तरीय रचनाओं और नव लेखन को बढ़ावा देना तथा उपलब्ध साहित्य को जन साधारण के सामने प्रस्तुत करना।

२. विविध भारतीय ललित कलाओं एवम् संगीत को प्रोत्साहित करना।

३. राष्ट्र भाषा हिन्दी के गौरव के लिए प्रयास करना।

४. हिन्दी को शिक्षण और बोलचाल के क्षेत्र में लोकप्रिय बनाना।

५. हिन्दी को रोजी-रोटी प्राप्त करने की भाषा बनाना तथा सब तरह के कारोबार में इसके प्रयोग को बढ़ावा देना।

६. भारत की एकता के लिए हिन्दी की सेवा करना।

साहित्य-संगीत-कला को समर्पित

शब्दम्

चरण ४ : २००७-०८

नियामक मंडल

अध्यक्ष

किरण बजाज

उपाध्यक्ष

नन्दलाल पाठक

उदयप्रताप सिंह

सोम ठाकुर

विशिष्ट सलाहकार

शेखर बजाज

बालकृष्ण गुप्त

स्थानीय सलाहकार

उमाशंकर शर्मा

डॉ. ए .के. आहूजा

डॉ. रजनी यादव

डॉ. ध्रुवेंन्द्र भदौरिया

डॉ. महेश आलोक

मंजरउल वासै

संपादन-प्रकाशन

मुकुल उपाध्याय

अनुक्रम

अध्यक्षीय निवेदन ३

"समझ का विकास संगत और चिन्तन से होता है" ४

"तुम कहते हो फांसी है.... मैं कहता हूँ हत्या है" ८

"कौशल्या जन्म नहीं लेंगी तो राम कहाँ से लाओगे" ११

"माँ जैसी रचना क्या होगी" १४

"हमलावरों के वास्ते हम मौत हैं" १५

प्रश्नमंच १८

"समर्पण और अनुशासन–लक्ष्य की सीढ़ियां" २०

"हिन्दी को राष्ट्र भाषा का सम्मान दिलाना ज़रूरी" २१

शब्दम् का चतुर्थ स्थापना दिवस २२

सलाहकार समिति के सदस्यों का संक्षिप्त परिचय २६

अध्यक्षीय निवेदन

जो 'हित' के 'सहित' है वही है साहित्य। साहित्य के माध्यम से शब्दम् जनहित के लिए प्रयासशील है। पिछले कुछ ही वर्षों में अपनी विविध गतिविधियों द्वारा संस्था ने अपनी उपयोगिता सिद्ध कर दी है। हमें ध्यान है कि हमारी यात्रा लम्बी और कठिन है।

शिकोहाबाद और मुम्बई शब्दम के कार्यक्षेत्र के महत्त्वपूर्ण केन्द्र हैं। २६/११ को आतंकवाद की जिस विभीषिका का मुम्बई को सामना करना पड़ा, वह दिल दहला देनेवाली थी। फिर भी अपनी जीवनी शक्ति के बल पर मुम्बई महानगर अपनी व्यापारिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय हो गया। आशा है इस कटु अनुभव से देश को मूल्यवान शिक्षा मिलेगी।

गत वर्ष शब्दम् के कार्यक्रमों में जो विशेष उल्लेखनीय रहे उन्हें मैं रेखांकित करना चाहती हूँ: कहानी वाचन और परिचर्चा, ग्राम सरस कवि सम्मेलन, हिन्दी काव्य गायन प्रतियोगिता एवम् चतुर्थ स्थापना दिवस।

हर्ष का विषय है कि शब्दम् परिवार को शिक्षकों और शिक्षा संस्थाओं से विशेष स्नेह और सहयोग प्राप्त होने लगा है, जैसा कि हमारे कार्यक्रमों से व्यक्त होता है। इससे हमारे उत्साह में वृद्धि हुई है। श्री मंज़रउल वासै, डॉ. ध्रुवेन्द्र भदौरिया, डॉ. महेश आलोक, डॉ. रजनी यादव, डॉ. ए .के. आहूजा, डॉ. कांता श्रीवास्तव के साथ अन्य अनेक साहित्य प्रेमियों का निरंतर. सक्रिय सहयोग मिल रहा है। यह हमारी संस्था के भविष्य के लिए अत्यंत शुभ है।

ईश्वर से प्रार्थना है हम इसी प्रकार आगे भी परस्पर सहयोग द्वारा शब्दम् को गति और जीवन देने में समर्थ हों.

विनीत

किरण बजाज

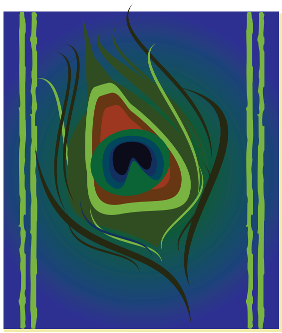

"समझ का विकास संगत और चिन्तन से होता है...."

● **कार्यक्रमः** कहानी वाचन एवं परिचर्चा

● **दिनांकः** 28 जनवरी, 2008 ● **समयः** पूर्वान्ह 11 से 3:30 बजे ● **स्थानः** आदर्श कृष्ण महाविद्यालय, शिकोहाबाद

● **संयोजनः** शब्दम् एवं आदर्श कृष्ण महाविद्यालय ● **संचालनः** मंज़रउल वासै

● **आमंत्रित कहानीकारः** डा0 श्यामवृक्ष मौर्य एवं श्रीमती अलका मधुसूदन पटेल

नगर की साहित्यिक संस्था 'प्रगतिशील लेखक संघ' के संचालक श्री राजेन्द्र सिंह यादव ने कहानी के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "कहानी आदिकाल से चली आ रही है। इसका विकसित स्वरूप लघुकथा, कथा, फिर उपन्यास है। लेकिन कहानी हमेशा केन्द्र में रही।"

डा. श्यामवृक्ष मौर्य द्वारा कहानी 'घरवाली' का वाचन किया गया, जो कि समाज में घरवाली की दशा व पुरुषों की उनके प्रति बदलती मनोवृत्ति को चित्रित करती है। श्रीमती अलका पटेल द्वारा कहानी 'दूध के दाँत' का वाचन किया गया। यह एक बालक की कहानी है जो अपनी माँ के प्रति अपने पिता के दृष्टिकोण को समझता है और उससे आहत होकर अपनी माँ को अपने पिता की नज़रों में सम्मान दिलाने का प्रयास करता है।

तत्पश्चात श्री मंज़रउल वासै, डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया, डा. राजेन्द्र सिंह यादव तथा डा. मिथिलेश दीक्षित ने कहानियों की समीक्षा की।

डा. शशिकान्त पाण्डेय ने समीक्षा करते हुए कहा कि "दोनों ही कहानियाँ भारतीय सामाजिक परिवेश में संक्रमण को चित्रित करती हैं। दोनों की कहानियों में नारीवाद है तथा दोनों ही कहानियों में स्त्री–पुरुष के जीवन के परिवर्तनशील हिस्सों को रेखांकित किया गया है।"

मंचासीन (बांये से) श्री उमाशंकर शर्मा, श्रीमती अलका मधुसूदन पटेल, डा0 श्यामवृक्ष मौर्य तथा श्री मंज़रउल वासै ।

श्रीमती अलका मधुसूदन पटेल की कहानी 'दूध के दाँत' का सारांश

नन्हें बालक रोहित को स्कूल से घर लौटने पर नौकर रामू से पता चलता है कि उसकी मां को अचानक अपने मायके बनारस जाना पड़ा। रोहित को बहुत बुरा भी लगता है और गुस्सा भी आता है कि आखिर उससे क्या गलती हो गई, जो मां बिना बताये बनारस चली गई। सामने रहने वाली डा0 रीता आंटी आकर रोहित को प्यार से समझाती हैं और रोहित के साथ खेलने और उसका होमवर्क पूरा करा देने का आश्वासन देती हैं। रोहित को यह सब अच्छा नहीं लगता। सुबह उसके पापा उसे जगाते हैं और बताते हैं कि रोहित के नाना की तबियत अचानक बिगड़ जाने से उसकी मम्मी को जाना पड़ा। वे रोहित को सामान्य होने का परामर्श देते हुए यह भी कहते हैं कि उसकी मदद के लिए वह खुद और रीता आंटी हैं न। रोहित के पापा अपनी पत्नी का ध्यान आते ही सोचने लगते हैं कि वह पढ़ी लिखी होने के बावजूद न तो नौकरी करती है, न चार लाइन अंग्रेजी बोल पाती है और न रोहित को 'मैनर्स' सिखाती है। वे सोचते हैं कि पत्नी की अनुपस्थिति में डा0 रीता रोहित को कुछ 'रंग ढंग' सिखला देंगी। रीता 'माडर्न टाइप स्मार्ट' युवती है, जिसका साथ रोहित के पापा को बहुत भाता है ।

रोहित की मम्मी को गये 15 दिन हो गये हैं, उसकी अनुपस्थिति रोहित को तो बहुत अखर रही है, किन्तु उसके पापा डा0 रीता से मित्रता और उसके साथ गपशप और उसके निकट आने से बहुत खुश हैं। डा0 रीता पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित है, जबकि रोहित की मां एक सामान्य भारतीय गृहणी है। रोहित के पापा के जन्मदिन पर रीता अपनी कार से रोहित और उसके पापा को लेकर होटल अशोक में ले आती है। बैरा रोहित से पूछता है कि उसके मम्मी–डैडी ने तो तो अपनी पसन्द का आर्डर दे दिया है, वह क्या पसन्द करेगा? रोहित उखड़ जाता है और जोर से कहता है "वह मेरी मम्मी नही है" । रोहित के असभ्य व्यवहार पर रोहित के पापा एक जोरदार झापड़ लगा देते हैं। रीता, रोहित के पापा को हल्का सा उलाहना देती है, 'अमित जी, बच्चे को यूं 'टेकल' करते हैं? उसे समझा देते।' वह रोहित को भी प्यार से मनाने का प्रयत्न करती है, किन्तु रोहित इस स्थिति में भी सामान्य हो चुका है। घर लौटने पर रोहित पाता है कि उसकी मम्मी लौट आई हैं। सब कुछ सामान्य सा हो गया। रोहित की मां खाली समय में पेंटिंग बनाती और पेंटिंग के नीचे स्वरचित कविता की एक पंक्ति लिख देती।

श्रीमती अलका मधुसूदन पटेल

प्रकाशित पुस्तकें– लौट आओ तुम (कहानी) मंज़िलें अभी और हैं (कहानी)

प्रकाशनाधीन– ईश्वर का तो वरदान है बेटी। 1001 हस्तशिल्प कला।

बी 16/1 प्रतापनगर, जयपुर हाउस कालोनी, आगरा उ0प्र0।

मो0 नं0 – 09415067425 एवं 09358507127

एक बार रोहित ने किसी को बताये बिना अपनी मां की बनाई पेंटिग प्रदेश स्तरीय प्रतियोगिता में अपनी मां के नाम से भेज दी। सौभाग्य से इस प्रतियोगिता में रोहित की मां की बनाई पेंटिंग को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। सूचना प्राप्त हुई कि विजेता को महामहिम राज्यपाल द्वारा लखनऊ में सम्मानित किया जायेगा। पत्नी की इस उपलब्धि पर रोहित के पापा अमित को गर्व महसूस होता है और साथ ही खेद भी क्योंकि वे 'घर के हीरे' को नकार कर अब तक कहां पाश्चात्यता के अंधेरे में भटकते रहे। गर्वित होकर वे अपनी पत्नी और पुत्र को गले से लगा लेते हैं। दूध के दांत टूटने से तात्पर्य रोहित के समझदार होने से है।

डा0 श्यामवृक्ष मौर्य की कहानी 'घरवाली' का सारांश

कहानी 'घरवाली' का प्रारम्भ तो लेखक ने 'घरवाली' और 'बाहरवाली' के अन्तर से किया है जिसका तात्पर्य है; आमतौर पर पुरुष पत्नी की अपेक्षा प्रेमिका या अन्य किसी बाहर वाली पर अधिक प्रेम छिड़कता है, किन्तु कहानी के दो प्रमुख पात्रों अर्थात रतिनाथ वर्मा और उनके बॉस डा0 राजनीकांत श्रीवास्तव में से कोई भी 'बाहर वाली' के आकर्षण में बँधा नहीं दिखाया गया है। किन्तु दोनों पुरुष पात्र, पत्नी एवं अन्य महिलाओं के विषय में अच्छे विचार नहीं रखते। कहानी के नायक रतिनाथ वर्मा के साथ हृदय परिवर्तन का एक ऐसा चमत्कार होता है कि पूरा कथानक अस्तित्व में आ जाता है। होता यह है कि एक दिन रतिनाथ वर्मा घरवाली (अर्थात पत्नी)–राधा और बाहरवाली या प्रेमिका के साथ दो भिन्न प्रकार के आचरण करता है। पत्नी राधा के उलाहना देने पर उसके साथ भोजन करने बैठते हैं तो पाते हैं कि राधा की कटोरी में वर्मा जी की कटोरी से कम सब्जी है और इसी प्रकार गिलासों में दूध की मात्रा में भी अन्तर है। कारण पूछने पर जो मुख्य बात सामने आती है कि पति कमाता है, पत्नी घर में रहती है और फिर पति मर्द है, पत्नी बेचारी औरत है। रतिनाथ का हृदय परिवर्तन होता है और उस रात वे एक नये रूप में पत्नी पर सामान्य से बहुत अधिक प्रेम उडेंलते हैं। पति से ऐसा व्यवहार देख दूसरे दिन जब उसके पति आफिस चले जाते हैं तो राधा अपनी कई परिचित महिलाओं को अपने घर बुलाती है और स्त्री–पुरुष सम्बन्धों तथा स्त्री के अधिकारों पर चर्चा करते हुए अपने साथ हुई घटना को विस्तार से सुनाती है। चर्चा इस विषय पर भी होती है कि स्त्री, मात्र सन्तानोत्पत्ति और परिवार सेवा के लिए ही नहीं है, फिर ये दोनों कार्य विशेष रूप से सन्तानोत्पत्ति समाज के लिए अनिवार्य भी हैं। सभी उपस्थित महिलाएं 'औरत होने के मायने और महत्व' को समझ जाती हैं।

उधर रतिनाथ के कार्यालय में बॉस रजनीकान्त एक महिला लिपिक को इसलिए डॉंट रहे हैं कि वह एक दिन पहले भी कार्यालय से समय से पहले चली गयी थी और आज भी जाने की आज्ञा मांग रही है क्योंकि उसका बेटा बीमार

है। बॉस वैसे तो उसकी बातों पर विश्वास नहीं करते किन्तु रतिनाथ के यह पुष्टि करने पर कि उसका बेटा वास्तव में बीमार है, बॉस उसे जाने की आज्ञा दे देते हैं। उसके चले जाने के बाद रतिनाथ महिलाओं के कार्यों, कर्तव्यों और महत्व पर एक लम्बा भाषण सा देते हैं। बॉस पर उन सब बातों का बहुत प्रभाव पड़ता है । घर आने पर वे भी अपनी पत्नी सरिता के साथ एक असामान्य रूप से प्रेम भरा व्यवहार करते हैं । कहानी इस निष्कर्ष के साथ समाप्त होती है कि औरत का विकसित रूप मां का है और सारे रूप उसकी जीवन यात्रा के पड़ाव हैं। 'घरवाली' उसी मां का रूप है ।

डा.श्यामवृक्ष मौर्य

जन्म 12 अगस्त 1957 एक साधारण कृषक परिवार में ।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से दर्शनशास्त्र से एम.ए. करने के बाद वहीं से अद्वैत वेदान्त पर पी.एच.डी., बी.जे., डिप्लोमा इन योग की डिग्री। कुछ दिनों तक काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अध्यापन । उ.प्र. शिक्षा आयोग से चयनोपरान्त रीडर, दर्शन शास्त्र विभाग, ए.के. कालेज, शिकोहाबाद में अध्यापनरत ।

कृतियां– समाज, दर्शन और राजनीति, बौद्धधर्म और दलित चेतना, अद्वैत वेदान्त, एक और दौपदी (कहानी संग्रह), एहसास के नये दायरे (कहानी संग्रह), मुझे भी चांद छूना है (उपन्यास), हलो ! मैं कृष्ण बोल रहा हूं (उपन्यास)

संपर्क – दर्शनशास्त्र विभाग, ए.के. कालेज, शिकोहाबाद फिरोजाबाद (उ0प्र0) –205141 मो0– 09411411684

चलो कुछ खेल जैसा खेलें

महेश आलोक

चलो कुछ खेल जैसा खेलें
थोड़ा–थोड़ा साहस थोड़ा–थोड़ा भय साथ–साथ रखें
थोड़ा–थोड़ा अनुचित थोड़ा–थोड़ा उचित
इतना प्रेम करें कि मजा यह भी हो कि थोड़ा–थोड़ा नैतिक
थोड़ा–थोड़ा अनैतिक होना अच्छा लगे।
थोड़ी–थोड़ी सड़कें थोड़ी–थोड़ी खिड़कियां
देय की अंतिम कला में खोलें।
थोड़ी–थोड़ी मृत्यु थोड़ा–थोड़ा जीवन प्रेम के भीतर
रखने का काम भी गलत नहीं लगेगा ऐसे समय
इस कठिन समय में चलो
कुछ खेल जैसा खेलें।

“तुम कहते हो फांसी है....
मैं कहता हूँ हत्या है”

• **कार्यक्रम विषयः** कविता समय (विविध रस काव्य समारोह)
• **दिनांकः** 24 फरवरी, 2008 • **समयः** पूर्वाह्न 11 बजे से 3:30 बजे • **स्थानः** ज्ञानदीप सी.सेके. पब्लिक स्कूल, शिकोहाबाद • **संयोजनः** शब्दम् एवं ज्ञानदीप सी.सेके. पब्लिक स्कूल
• **आमंत्रित कविगण** :डा0 सुरेश पराग, श्री अभिराम पाठक, श्री रवीन्द्र शर्मा, श्री देव मनमौजी एवं सुश्री नीलम कश्यप

काव्य समारोह का शुभारम्भ जहांगीराबाद से पधारे हास्य कवि देव मनमौजी के कविता पाठन से हुआ। उन्होंने शहीदों को श्रद्धांजलि “राम और रहीम से आस्था तो है जुड़ी, लेकिन पहले देश के शहीद को प्रणाम है” पढ़कर देशभक्ति की लहर पैदा की। हास्य कविता “इक बार लालू से हमने पूछा, ज़िन्दगी की परिभाषा क्या है तो वे बोले बिहार की गद्दी पर कभी राबड़ी तो कभी हम” नेता व महात्मा गांधी पर रचित कविता “देश में फूट के बीज हम बोते रहेंगे, लोग तेरे नाम को याद करके रोते रहेंगे” एवं अपनी प्रमुख रचना शराबी और प्रशासन पढ़कर श्रोताओं को खूब गुदगुदाया।

शिकोहाबाद नगर पालिकाध्यक्ष श्री रघुवर दयाल गुप्ता, श्री पी0सी0यादव, सुश्री नीलम कश्यप, श्री अभिराम पाठक, डा0 सुरेश पराग, श्री रवीन्द्र शर्मा तथा श्री देव मनमौजी।

छतरपुर, मध्यप्रदेश से पधारे व्यंग्यकार अभिराम पाठक ने छन्द 'कुर्सियों के मोह में लालची न होते हम, देश में ही आज देशभक्त नहीं ढूंढ़ते'' व भारत और अमेरिकी संस्कृति की तुलना पर रचित कविता ''एक दूसरे को त्यौहार बाँटते हैं हम, आप जिस दुनिया को हथियार बाँटते हो यार उस दुनिया को प्यार बांटते हैं हम'' तथा भगत सिंह की फाँसी पर रचित व्यंग्य कविता ''भगत सिंह के साथ ब्रिटिश कानून भी सूली पर चढ़ गया, तुम कहते हो ये फाँसी है, मैं कहता हूँ हत्या है'' पढ़ीं।

जालौन से पधारीं संयोग श्रृंगार की कवयित्री नीलम कश्यप ने ''मैं गीत लिखती हूँ, ग़ज़ल के लिबास में, सागर समेट लेती हूं छोटे गिलास में'' पढ़ कर अपने काव्य पाठन का शुभारम्भ किया।

पन्ना, मध्यप्रदेश से पधारे व्यंजना कवि डा. सुरेश पराग ने अपनी कविता ''अभी नहीं.... जब तुम्हारे अधरों का रंग गुलाब की पंखुड़ियों पर बिखर जायेगा, तुम्हारी आँखों से चमक माँग कर सूरज और निखर जायेगा, तब मैं जरूर एक कविता लिखूँगा'' से अपने कविता पाठन का प्रारम्भ किया। तत्श्चात् कविता के इतिहास पर अपनी रचना ''जब ठंड में ठिठुरती थी, काँपती थी..... एक दिन आसमान का साथ छोड़कर, घुस आया चाँद मेरा फूँस का छप्पर तोड़कर, उसने कविता के गाल को छुआ, तब न जाने क्या हुआ, हाय रे सो गई कविता, न जाने कहाँ खो गई कविता'' पढ़ी।

डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने भगतसिंह पर अपनी कविता ''जातियों की सीमा से भी पार गईं रोटियाँ'', ''नीर भरी बदली सी मिट गई महादेवी, मैं महीयसी के नैनों का नीर होना चाहता हूँ, राम की कसम मैं कबीर होना चाहता हूँ'' पढ़ श्रोताओं को काव्य सरिता में डुबकियां लगवाईं।

शब्दम् सलाहकार समिति के सदस्य डा. महेश आलोक ने अपनी रचना ''धूप की बहती नदी है, चलो अंजुरि भर नहा लें, नये मौसम की पुलक से इक नया मौसम चुरा लें'' व ज्ञानदीप की निदेशक डा. रजनी यादव ने ''मां की ममता जिसने न जानी'' पढ़ी जिसकी श्रोताओं ने भूरि–भूरि प्रशंसा की।

जालौन से पधारे वरिष्ठ कवि रवीन्द्र शर्मा ने ब्रज गीत ''बौरी भई नैनसुख निबोरी'' पढ़ श्रोताओं को शान्त रस का आनन्द दिया। होली के सन्दर्भ में गीत ''गीतों का रंग डाल–डाल के ग़ज़लों का गुलाल मल दूं, कविता कामिनी आज तेरे मैं लाल गाल कर दूं'' व हिन्दी पर अपनी रचना ''मैं हिन्दी हूँ, भारत माता के माथे सुखद सलोनी बिन्दी हूँ'' पढ़ी।

कार्यक्रम का सफल संचालन प्रबुद्ध कवि व शब्दम् सलाहकार समिति के सदस्य डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने किया।

डा0 सुरेश पराग

जन्म– 1 दिसम्बर 1955

पता– (देवेन्द्र नगर) जिला– पन्ना, मध्य प्रदेश

अदो उपन्यास, तीन प्रबन्ध काव्य, एक नाटक (राम की अग्नि परिक्षा) प्रकाशित, अटेली फिल्म (कठपुतली) का भोपाल दूरदर्शन से प्रसारण।

अखिल भारतीय मंचों पर व्यंग्यकार, साहित्यकार एवं कवि के रूप में प्रसिद्ध।

उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाण एवं राजस्थान के विभिन्न सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मान।

'मैं मोर हूँ आदमी नहीं'

डा0 सुरेश पराग

एक सँपेरे ने
जैसे ही पिटारी का ढक्कन हटाया
उसके अन्दर बैठे साँप ने
अपना फन उठाया।
सँपेरे ने उसे पकड़ा
भीड़ के सामने लहराया
बोला........भाइयों
यह वह साँप है
जिसने पता नहीं कितने लोगों को डसा है
बड़ी मुश्किल से हमारे चंगुल में फँसा है
हमने इसका सारा जहर निचोड़ दिया है
इसके जहर का एक एक दांत तोड़ दिया है
अब जब हम कहते हैं
तब यह फन उठाता है
कहने के लिए तो साँप है
लेकिन हमारे लिए पैसा कमाता है
सँपेरे की बातें सुनसुन कर
साँप का खोया हुआ स्वाभिमान जागा
वह सँपेरे के हाथ फुफकार मार कर
उसके हांथ से छिटक कर दूर भागा
भागते हुए साँप के सामने
अचानक मोर आ गया
मोर को देखा तो साँप चकरा गया!
क्या करें भाई.........?
एक ओर कुआं तो दूसरी ओर खाई
आगे जाता है
तो मोर उसे खा जाएगा
पीछे लौटता है
तो सँपेरे के हाथ में जीवित जाएगा
फिर उनके लिए पैसा कमाएगा
साँप क्षण भर ठिठका
मुड़कर सँपेरे की ओर देखा
कुछ सोचा
और......मोर की ओर बढ़ गया
मोर ने उसे पंजे में दबाया
और उड़ गया
लेकिन
सँपेरे के दूर चले जाने के बाद
मोर ने साँप को खाया नहीं
बल्कि जीवित जमीन पर छोड़कर
कर दिया आजाद
अब साँप चकराया
बोला.......
मोर, मैं तुम्हारा भोजन था
तुम्हारे सामने आया
पर तुमने मुझे क्यों नहीं खाया
मोर ने कहा
साँप.........
तुम जिन परिस्थितियों में
मेरे पास आए थे
उसमें मेरा मन नहीं किया
कि मैं तुम्हें खाऊं
अरे....! मैं मोर हूं
कोई आदमी नहीं हूं
जो किसी की मजबूरी का
फायदा उठाऊं.....!

कौशल्या जन्म नहीं लेंगी तो राम कहाँ से लाओगे..........

- **कार्यक्रम विषयः** ग्राम सरस कवि सम्मेलन
- **दिनांकः** 8 जून, 2008 • **समयः** पूर्वाह्न 11 बजे से 4:00 बजे • **स्थानः** शिवजी का मन्दिर, ग्राम फतेहपुर कर्खा (शिकोहाबाद) • **संयोजनः** शब्दम् • **संचालनः** डा0 ध्रुवेन्द्र भदौरिया, मंज़रउल वासै
- **आमंत्रित कविगणः** श्री होशियार सिंह 'शम्बर', सतीश 'मधुप', सुरेश फक्कड़, नारायण गुप्त 'टोपा' एवं मुन्नालाल 'सौरभ'

स्वतंत्रता सेनानी चन्द्रशेखर आजाद की धरती से पधारे कवि सुरेश फक्कड़ ने किसानों के प्रति अपनी वेदना प्रकट करते हुए छन्द ''चन्दन के वन काट दिए हर गांव गली में बबूल घना है, मृग सोने का मोह गया मन को, अब रावणी वृत्ति से जूझना है, उस माटी से कोई बड़ा है नहीं, जिस माटी पे माटी को छूटना है, जिस देश में भूखा किसान मरे उस देश को तो अब डूबना है'' प्रस्तुत कर किसानों की प्रशंसा प्राप्त की।

बेवर से पधारे कृषक कवि मुन्नालाल 'सौरभ' ने गांव की भाषा में ग्रामीणों को पर्यावरण बचाने की सलाह देते हुए 'लुटा जा रहा है कुदरत का ये अनमोल खजाना, भइया पर्यावरण बचाना, बहिना पर्यावरण बचाना' जैसी रचनाएं प्रस्तुत कर श्रोताओं की खूब वाहवाही लूटी।

सरस्वती चित्र पर दीप प्रज्वलित करते श्री राजेश पाण्डेय।

शिकोहाबाद के वरिष्ठ कवि अशोक मथुरिया ने गांव के प्रति खिंचाव को अपनी रचना ''खिन्नी, गुनियाँ गूलर न्यारे, फूट, कचरियाँ साग, सिगारे, फटा पेवसी, मठा मलीदा गुर को खाऊंगी, सैंया ले चल मोकूँ गाँव शहर में नहीं रह पाऊँगी'' प्रस्तुत की ।

टूण्डला के हास्य–व्यंग्य कवि नारायण गुप्त 'टोपा' ने अपनी रचनाएं ''ऊँ जय कुर्सी रानी, तुम्हें देख सबके मुँह में भर आता पानी'', ''अभियंता ने कल ही जो पुल दिया बनाय, वही आज दुर्भाग्य से, नदिया में उतराय'', ''दिल्ली से रुपया चला, ज्योंही पहुंचा गांव, पन्द्रह पैसे रह गए, ऐसा हुआ हिसाब'' आदि प्रस्तुत कर श्रोताओं को खूब गुदगुदाया।

कवि सतीश मधुप ने ज्वलंत सामाजिक समस्या कन्या भ्रूण हत्या पर अपनी रचना'' तो पार्वती सुत वाले चारों धाम कहाँ से लाओगे, कौशल्या जन्म नहीं लेंगी तो राम कहाँ से लाओगे?'' के माध्यम से

चिंता प्रकट की।

डा0 ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने अपनी रचना 'मेरे मित्र मेरे गाँव मत आना, यहाँ का जल मत पीना, यहाँ का अन्न मत खाना' व श्रोताओं की विशेष मांग पर अपनी चिरपरिचित कविता 'जटायु' का पाठ किया।

बुलन्दशहर से पधारे कार्यक्रम के अध्यक्ष व वरिष्ठ कवि श्री होशियार सिंह 'शम्बर' ने पर्यावरण पर अपनी कविता ''पर्यावरण बिगाड़ा तुमने क्या यह तुमको ज्ञात नहीं है, बाग, वन पेड़ पुराने, काट दिये कम बात नहीं है, करके हस्तक्षेप प्रकृति में, मचा रहे हो त्राहि–त्राहि तुम, बिन पेड़ बरसा दे पानी, बादल की औकात नहीं है'' व ''मधुरम–मधुरम गाती चिड़ियाँ, हमें देख शरमाती चिड़ियाँ, उछल कूदकर खाती दाने, झट से फिर उड़ जाती चिड़ियाँ'' प्रस्तुत की।

तत्पश्चात् जिला सहकारी बैंक के महाप्रबन्धक इन्द्रपाल सिंह चौहान ने ग्रामीण उत्थान हेतु बैंक द्वारा चलाई जा रही योजनाओं एवं स्वयं सहायता समूहों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी।

गांव के पूर्व प्रधान राजवीर सिंह यादव ने संस्था द्वारा गांव में चलाये जा रहे विकास कार्यों की प्रशंसा करते हुए गांव में 'शब्दम्' वाचनालय स्थापित कराने की मांग की।

ज्ञानदीप की निदेशक डा. रजनी यादव ने ग्रामीणों को सीख देते हुए कहा, ''आप अपने गांव का दूध डेरी पर बेच कर हुई कमाई को शराब, पान–मसालों और अन्य व्यसनों में बर्बाद कर देते हैं। इसकी अपेक्षा अपने बच्चों को उच्च संस्कार दें।''

डा0 रजनी यादव, डा0 ध्रुवेन्द्र भदौरिया, श्री होशियार सिंह 'शम्बर', सतीश 'मधुप', सुरेश फक्कड़, नारायण गुप्त 'टोपा' एवं मुन्नालाल सौरभ।

कौशल्या जन्म नहीं लेंगी तो...
सतीशचन्द्र 'मधुप'

जननी और जन्मभूमि दोनों का मान स्वर्ग से ऊपर है ।
ईश्वर रखवाला ऊपर है जननी रखवाली भू पर है ।।
नारी को नर की खान कहा निन्दा छोड़ी सम्मान दिये ।
नारी ने ध्रुव प्रहलाद दिये और पैगम्बर इस्लाम दिए।।
तो पार्वती सुत वाले चारों धाम कहां से लाओगे ।
कौशल्या जन्म नहीं लेंगी तो राम कहां से लाओगे ।।
तुम ज्ञानवान होकर अज्ञानी झूले में क्यों झूल गये।
तो भ्रूण परीक्षण के परिणामों को तुम कैसे भूल गये।।

बेटी की हत्या गर होगी, तो घर–घर की बरबादी होगी ।
लाड़ले आपके बेटों की बोलो कैसे शादी होगी ।।
आगे को वंश बेल अपनी, तुम कैसे कहो बढ़ाओगे ।
बेटों की शादी नहीं हुयी तो नाती कैसे पाओगे।।
लक्ष्मी नहीं घर में होगी, घर को घर कौन वनायेगा ।
बेटी की हत्या गर होगी तो रोटी कौन खिलायेगा ।।
कलियों को जिसने मसल दिया उसके हाथों से फूल गये ।
तो भ्रूण परीक्षण के परिणामों को तुम कैसे भूल गये।।

सतीशचन्द्र 'मधुप'
जन्म– 21 जनवरी 1967
संवाददाता– दैनिक जागरण, घिरोर, मैनपुरी
प्रबन्धक– विवेकानन्द विद्या मंदिर – घिरोर

छंद और मुक्तक
सुरेश फक्कड

हिन्दी
गालिब, मीर, नजीर, रहीम, कबीर के साथ में
खेली है हिन्दी ।
जो वसुधा को कुटम्ब कहे,
हर भाषा की सच्ची सहेली है हिन्दी ।

चन्दन है तुलसी की लताओं में
सूर की बाग चमेली है हिन्दी ।
राग पे जो अनुराग बनी
खुसरो की अबूझ पहेली है हिन्दी ।

मुक्तक
पहेली दर पहेली के नवेली जोड़ जाती है।
अधर पर बात आने से ही पहले मोड़ जाती है ।
हमेशा वेवफा बनकर के आती,
किन्तु जब जाती
कभी चश्मा कभी रूमाल अपना छोड़ जाती है ।

सुरेश फक्कड़
ओज और श्रृंगार पर समान अधिकार रखने वाले फक्कड़ हैं। सदियों से आडम्बरों के वे कट्टर विरोधी हैं। अत्यंत गरीबी में उन्नाव जनपद उ0प्र0 के सैरमपुर ग्राम में पले फक्कड़ बेहद संवेदनशील हैं। चन्द्रशेखर आजाद को वे अपना इष्ट मानते हैं। 'आस्था के स्वर' 'गोधरा की लपटें' 'चांद का दम निकल गया होगा' उनके तीन काव्य संग्रहों के साथ यात्रा वृतान्त पर एक पुस्तक 'मेरी तीर्थ यात्रा' 'उन्नाव से भावरा तक' प्रकाशित है। फक्कड़जी ग्राम विकास अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं ।

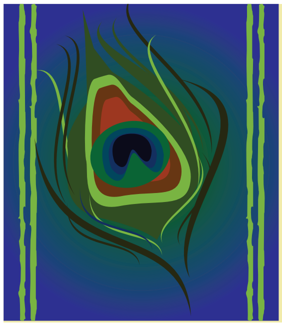

माँ जैसी रचना क्या होगी....

- **कार्यक्रम विषयः** स्थानीय कवियों की काव्य गोष्ठी
- **दिनांकः** 27 जून, 2008 • **समयः** सायं 6 बजे • **स्थानः** 'कल्पतरु' हिन्द परिसर,शिकोहाबाद
- **संयोजनः** शब्दम्
- **आमंत्रित कविगणः** श्री मंज़रउल वासै, डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया, ओम प्रकाश बेवरिया, गिरीश फलक, उत्तम सिंह उत्तम, सत्यदेव पाण्डेय, विवेक विश्वास, प्रशांत उपाध्याय, राजीव शर्मा 'आधार' आदि ।

कार्यक्रम का प्रारम्भ अध्यक्षता कर रहे मंज़रउल वासै ने स्वरचित निबन्ध 'बात की बात' का सार्थक एवं सारगर्भित 'ऐसी वैसी बातों से तो अच्छा है खामोश रहें, या फिर ऐसी बात करें जो खामोशी से अच्छी हो'' वाचन किया।

नगर के प्रबुद्ध कवि गिरीश 'फलक' ने अपनी जिस रचना का सस्वर पाठ किया, वह हैः

''अपने–अपने मन की बातें,
अपने–अपने मन में रखना,
दुख अपने दर–दर न भटकें,
हृदय के आंगन में रखना,
यादों की घनघोर घटायें,
जब आँखों में घिर आती हैं,
कितना मुश्किल है अश्कों को,
पलकों के बंधन में रखना।।
नींद नहीं आती हो जिसको,
ख्वाब उसे कैसे आयेंगे,
शायद किस्मत में लिखा है,
जीवन को उलझन में रखना।''

ओम प्रकाश बेवरिया ने अपनी रचनाएं प्रस्तुत कीं। डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने भारत माता की वन्दना 'हे विश्व वंद्य भारत माता', उत्तम सिंह उत्तम ने 'माँ सरस्वती की वन्दना', सत्यदेव पाण्डेय ने मुक्तक आदि प्रस्तुत किये।

इसके साथ ही प्रशान्त उपाध्याय ने व्यंग्य 'आजादी की वर्षगांठ का उत्सव', विवेक विश्वास व राजीव शर्मा 'आधार' ने कविताओं का वाचन किया।

ग़ज़ल

शिव ओम अम्बर.

अग्नि के गर्भ में पला होगा,
शब्द जो श्लोक में ढला होगा

दृग मिले कालिदास के उसको,
अश्रु उसका शकुन्तला होगा

दर्प ही दर्प हो गया है वो,
दर्पनों ने उसे छला होगा

भाल कर्पूरगौर हो बेशक,
गीत का कंठ सांवला होगा

हमलावरों के वास्ते हम मौत हैं...

- **कार्यक्रम विषयः** राष्ट्र चेतना काव्य उत्सव
- **दिनांकः** 17 अगस्त, 2008 • **समयः** अपरान्ह 1 बजे से 5:00 बजे • **स्थानः** ज्ञानदीप सी.सैके. पब्लिक स्कूल, शिकोहाबाद • **संयोजनः** शब्दम्
- **आमंत्रित कविगणः** श्री अर्जुन सिंह सिसौदिया, श्री जयसिंह आर्य, श्री अक्षय प्रताप 'अक्षय' एवं श्री बलराम श्रीवास्तव

कार्यक्रम का प्रारम्भ दिल्ली से पधारे कवि जय सिंह आर्य द्वारा सरस्वती वन्दना के पाठन से हुआ। मैनपुरी से पधारे कवि बलराम श्रीवास्तव ने काव्य उत्सव का प्रारम्भ अपनी ओजस्वी कविताओं ''मन विनय पत्रिका तन है दोहावली, लो समर्पित तुम्हें शब्द भावान्जलि, ज्ञान के दीप को जिसने मानस किया प्रेरणा हो गई एक रत्नावली, मन विनय पत्रिका तन है दोहावली'' से किया।

बुलन्दशहर से आये कवि अक्षय प्रताप 'अक्षय' ने देश में हो रहे भ्रष्टाचार से उत्पन्न हृदय की पीड़ा को रखते हुए 'पण्डित जी पुराण खा रहे हैं, मुल्ला जी कुरान खा रहे हैं, विधायक जी विधान खा रहे हैं, सांसद संविधान खा रहे हैं और कुछ तो ऐसे घाघ हैं जो पूरा हिन्दुस्तान खा रहे हैं' सुनाकर जनसामान्य को देश में हो रहे भ्रष्टाचार से रूबरू कराया तथा श्रोताओं की प्रशंसा प्राप्त की।

(बांये से) श्री अर्जुन सिंह सिसौदिया, डा0 उमाशंकर शर्मा, श्री जयसिंह आर्य, डा0 ध्रुवेन्द्र भदौरिया, डा0 रजनी यादव, अक्षय प्रताप अक्षय

मेरठ से पधारे कवि अर्जुन सिंह सिसौदिया ने वीर रस की कविताएं व अंग्रेजों के इस सवाल ''दमदमे में दम नहीं है खैर मांगो जान की, अब ज़फर झुकने लगी शमशीर हिन्दोस्तान की'' पर बहादुरशाह ज़फर का जवाब ''ग़ाज़ियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की, तख़्ते लंदन तक चलेगी तेग़ हिन्दुस्तान की'' सुनाकर माहौल को देशभक्तिपूर्ण कर राष्ट्र चेतना की लहर दौड़ायी।

दिल्ली से पधारे जयसिंह आर्य ने देशभक्तिपूर्ण रचनाएं पढ़ीं। ''प्यार का कायदा ये पढ़ना नहीं जानते, प्रेम की भाषा ये नहीं पहचानते, ये बात झूठ नहीं सच्ची है यारो, कि लातों के भूत कभी बातों से नहीं मानते'', सुभाषचन्द्र बोस के प्रति ''बुज़दिल को जांबाज बनाया नेता ने, जीने का अंदाज़ सिखाया नेता ने, समझेंगे ये बात अहिंसावादी कब, आजादी का ताज दिलाया नेता ने'' पढ़ीं। उनकी रचना 'कुर्बान होगा जो देश की आन के लिए, तरसेगा ये वतन उसी इंसान के लिए, इससे ज्यादा खूबसूरत मौत होगी क्या, मरना पड़े हमें जो हिन्दुस्तान के लिए, हमलावरों के वास्ते हम मौत हैं मगर, हाज़िर हमारी जान है मेहमान के लिए'' को लोगों ने सराहा।

बलराम श्रीवास्तव की रचना ''कर्म की लेकर पनैठी चाक जीवन का घुमायें, हम बनायें कुछ सुराही और कुछ दीपक बनायें, कह रही है गति हमारी हम कभी थकते नहीं, पृष्ठ हैं हम भागवत् के ब्रह्म की जिसमें ऋचायें'', अक्षय प्रताप 'अक्षय' की ''आज फफोले सुलग रहे हैं भारत मां के सीने में, नोंच रहे हैं आज उसे और लहू लगे हैं पीने में'' सराही गईं। अर्जुनसिंह सिसौदिया ने कृष्ण के महाभारत को रूकवाने के प्रयास पर अपनी रचना प्रस्तुत की।

डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने स्वतंत्रता सेनानी व क्रान्तिकारी भगतसिंह पर अपनी रचना 'जातियों की सीमा से भी पार गईं रोटियां' पढ़ श्रोताओं की खूब वाहवाही लूटी।

डा. महेश आलोक ने अपनी रचना 'एक मौन चुपके से रेंगकर दबे पांव पलकों पर सो गया, क ख ग बातों के सिलसिले, हिलते रूमाल हो गये, आसपास की हवा बदल गई, हम गुजरे साल हो गये, पकी धूप डसना था डस गई, कुछ का कुछ होना था हो गया, एक मौन चुपके से रेंगकर, दबे पांव पलकों पर सो गया' का पाठ किया।

ज्ञानदीप की निदेशक डा. रजनी यादव ने अपनी कविता 'माँ की ममता' का पाठ किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री उमाशंकर शर्मा ने अपने वक्तव्य में बलराम श्रीवास्तव सहित सभी कवियों की काफी प्रशंसा की तथा कहा कि ''साहित्यकारों के ऊपर विशेष रूप से समाज को दिशा देने का दायित्व है । इतिहास साक्षी है कि सभी जगह सामाजिक परिर्वतन एवं क्रांतियां बुद्धिजीवियों के विचारों से प्रेरित होकर हुई हैं।''

डा. मिथिलेश दीक्षित

एक दिन की ज़िन्दगी भी
शान से जीनी हमें है,
सौ बरस के जीर्ण–जर्जर
पंजरों का क्या करूँगी !

आस्था के द्वार से
आस्था के द्वार तक
यात्रा ही यात्रा है
जीवन के पार तक ।

जिन्दगी

जयसिंह आर्य 'जय'

आदमी को चाहिए ऐसी बनाए जिन्दगी
आंधियों के दरमियाँ भी मुस्कराए जिन्दगी

जिन्दगी में ग़म के बादल आयेंगे मंडरायेंगे
उतनी निखरे जितनी बारिश में नहाये जिन्दगी

वाटिका में भावना की, पुष्प हो सौहार्द के
आस्था की गन्ध ही ओढ़े बिछाये जिन्दगी

देश की खातिर जिये औ, देश की खतिर मरें
देश पर बलिदान हो तो जगमगाये ज़िन्दगी

जिन्दगी जीते हैं 'जय' यूं तो करोड़ों आदमी
बात जब है ज़िन्दगी के गीत गाये ज़िन्दगी

जयसिंह आर्य

जन्मः 7 अगस्त सन् 1954 ''जय भारती'' काव्य संकलन का सम्पादन सन् 1984, ''काव्य गंगा'' के उपसम्पादक के रूप में कार्यरत।

पुरस्कृत रचनाः छब्बीस जनवरी सन् 1986, व सन् 1994, **प्रकाशन** : गीत संग्रह : गीत लहरी 'मचान' तेवरी संकलन के मुख्य तेवरीकार, 'अपनी धरती अपने बोल' 'यह जो हमारा है' 'समवत' काव्य संकलन के मुख्य सहभागी कवि क्रान्तिमन्य, गीतकार,काव्य गंगा के प्रमुख प्रकाशित गीतकार एवम् राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं में समय–समय पर सक्रिय लेखन व प्रकाशन। अनेक सम्मानों से अलंकृत।

सम्प्रतिः दिल्ली नगर निगम के स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत। **पता** : एफ0–12 कुंवरसिंह नगर नांगलोई, दिल्ली

011–28361656,मो0–09871364772

घायल तब–तब सम्बंध हुए

बलराम श्रीवास्तव

जब–जब टूटे मन के धागे
घायल तब तब संबंध हुए ।
घायल आंसू की भाषा में
विरहन मीरा के छन्द हुए ।।

कल–कल–मय मधु धाराओं में
सरगम का स्वर तो साध लिया
पीड़ा का अंतस लहरों में
मैने जीवन को बांध लिया ।।
तुम नीर विहीन बनी सरिता
और हम सूने तटबंध हुए
जब–जब टूटे मन के धागे
घायल तब तब संबंध हुए ।।

जीवन कारा में कैद हुई
रश्मियां निहारा करता हूं।
यादों के ज्योतिर्दीप लिये
आरती उतारा करता हूं।।
झुलसे मन उपवन के प्रसून
मुझ पर इतने प्रतिबन्ध हुए
जब–जब टूटे मन के धागे
घायल तब तब संबंध हुए ।।

बलराम श्रीवास्तव

जन्म– 30–12–1970

पता– सदर बाजार, किशनी जिला – मैनपुरी (उ0प्र0) 206302

सम्प्रति– बेसिक शिक्षा विभाग उ0प्र0 में अध्यापक एवं संस्थापक श्री नारायण विद्या आश्रम, किशनी

सम्पूर्ण भारत के अखिल भारतीय मंचों पर स्थापित गीतकार के रूप में काव्यपाठ। आकाशवाणी के विभिन्न केंन्द्रों तथा दूरदर्शन के विभिन्न चैनल से काव्य पाठ

प्रकाशन– मन तुम्हारे पास है, ये तिरंगा रहे हम रहें न रहें (मुक्तक संग्रह) अनेक पुरस्कारों से सम्मानित

प्रश्नमंच

● **कार्यक्रम विषयः** प्रश्नमंच प्रतियोगिता

● **दिनांकः** 6 सितम्बर से 30 सितम्बर 2008 ● **समयः** विद्यालयानुसार ● **स्थानः** विद्यालय/महाविद्यालय शिकोहाबाद ● **संयोजनः** शब्दम्

कार्यक्रम का प्रारम्भ ज्ञानदीप की छात्राओं नन्दिनी, मिताली, आख्या, भारती, निशा, आकांक्षा आदि द्वारा माँ सरस्वती की वन्दना 'जयति जय–जय माँ सरस्वती, जयति वीणा वादिनी' से हुआ।

तत्पश्चात् हिन्दी प्रश्नमंच प्रतियोगिता का प्रारम्भ हुआ। नगर के प्रबुद्ध समीक्षक श्री मंज़रउल वासै द्वारा हिन्दी भाषा से जुड़े बहुत ही रोचक व ज्ञानवर्धक प्रश्न पूछे गये। इस प्रतियोगिता में कक्षा 9 से 12 के लगभग 200 छात्र–छात्राओं ने भाग लिया। जिसमें आशुतोष, हुदा, गौरव, रविकान्त, नन्दिनी, अंजू, अभय, विपिन, महेन्द्र, रितु यादव, आकांक्षा, खुशबू, सौम्या आदि छात्र–छात्राओं ने पुरस्कार प्राप्त किये।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया ने अपने वक्तव्य में कहा कि "प्रश्नमंच प्रतियोगिताओं का उद्देश्य छात्र–छात्राओं की परीक्षा लेना न होकर उनके ज्ञान में वृद्धि करना है। वह गलतियाँ जिनसे हम अन्जान रहते हैं, उनको दूर करना है। क्योंकि लोकभाषा ने उन शब्दों को इतना प्रचलित कर दिया है कि हम कुछ शब्दों को सही–सही लिख और बोल नहीं पाते हैं। इनके माध्यम से आपको यही ज्ञान दिया गया है।"

प्रश्नमंच के दौरान पूछे गये प्रश्न का जवाब देती हुयी छात्रा।

अपने प्रधानाध्यापक से पुरस्कार प्राप्त करती छात्रा।

कार्यक्रम की अध्यक्ष डा. रजनी यादव ने कहा कि ''हमारे समय में इस तरह की प्रतियोगिता नहीं हुआ करती थीं। आज बहुत ही अच्छी–अच्छी प्रतियोगितायें आयोजित की जा रही हैं, जिससे छात्र–छात्राओं के ज्ञानवर्धन के साथ–साथ उनमें छिपी प्रतिभाएं भी सामने आ रही हैं।''

प्रश्नमंच प्रतियोगिताएं 'ज्ञानदीप' के अतिरिक्त बी0डी0एम0कन्या इण्टर कालेज, बी0डी पालीवाल कन्या इण्टर कालेज, प्रह्लाद राय टीकमानी इण्टर कालेज,शिकोहाबाद एवं श्रीमती गौमती देवी कन्या इण्टर कालेज, धातरी में भी आयोजित की गयीं एवं सभी स्थानों पर ये प्रतियोगिताएं सफल और व्यावहारिक रूप से लाभकारी रहीं ।

मैं कर रहा होता हूँ कविता

रवि कुमार

जबकि
काँटो की बाड़ का चलन
आम हो गया है
मैं महकते फूलों की
पौध तैयार कर रहा हूँ

यह अक्सर ही होता है
लोग समन्दर पी पी जाते हैं
मैं चुल्लू बनाए
झुका रह जाता हूँ

या कि जब
लोग सोए होते हैं
हसीन ख्वाबों में खोए
मैं जाग रहा होता हूँ रात रात
मैं कर रहा होता हूँ कविता

गीत

रामेन्द्र मोहन त्रिपाठी

अब छोड़ नागबंसी
ओकाल के सँपेरे
बाहर निकल रहे हैं
भीतर धँसे अँधेरे ।।

बादल दलों में बंदी
धारा तलों में गंदी
अंधे कुंए में बिजली
जलवा रहे शिखंडी
बेबाक करने होंगे
हर शाम को सबेरे ।।

बैसाखियां लगी हैं
टांगें अलग टंगी हैं
धड़कन है बंद तो क्या
आंखें अभी जगी हैं
चांदी के बाल रोकर
होते नहीं घमेरे ।।

आश्वासनों के बेटे
आराम से हैं लेटे
बे पेंदियों के लोटे
सारा जगत समेटे
मछली फिसल रही है
लहरें गिनो मछेरे ।।

समर्पण और अनुशासन लक्ष्य की सीढ़ियां : कविता द्विवेदी

- **कार्यक्रम विषयः** ओडिसी नृत्य
- **दिनांकः**19 सितम्बर, 2008 • **समयःदोपहर** 12:00 बजें • **स्थानः** ज्ञानदीप सी0सेके0 पब्लिक स्कूल,शिकोहाबाद • **संयोजनः** शब्दम्, स्पिक मैके एवं ज्ञानदीप स्कूल,शिकोहाबाद

प्रस्तुतिः कविता द्विवेदी

कार्यक्रम का शुभारम्भ ऑडिसी की प्रख्यात नृत्यांगना कविता द्विवेदी ने डायरेक्टर डा0 रजनी यादव के साथ मां सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्जवलित एवं माल्यार्पण कर किया।

कविता द्विवेदी ने नृत्य की बारीकियों से छात्रों को अवगत कराया। उन्होंने भारत के सात शास्त्रीय नृत्य तथा लोक नृत्यों के बारे में बताया।

नृत्य का प्रारम्भ मंगलाचरण से किया, जिसमें उन्होंने भगवान जगन्नाथ की स्तुति के पश्चात मां सरस्वती की वंदना पर नृत्य किया।

नृत्य के क्रम में कविता द्विवेदी ने चौका, त्रिभंग, ग्रीवा दृष्टि आदि विषय में जानकारी दी । उन्होंने नृत्य के साथ नवरस तथा बसंत ऋतु का परिचय कराया। उन्होंने नृत्य द्वारा अश्व, हाथी, हंस, शेर, बन्दर, मेंढक आदि जानवरों की मुद्रायें सार्थक कीं। नृत्य प्रस्तुति में माखन चोरी, गोपीस्नान, वस्त्र हरण, सीता हरण का एकल नृत्य प्रस्तुत करके वर्षों पुरानी पौराणिक कथाओं को मंच पर पुनर्जीवित कर दिया । उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि हम किसी भी क्षेत्र में भक्ति, समर्पण और अनुशासन के द्वारा अपना लक्ष्य पा सकते है।

नृत्य का आनंद लेते स्कूली बच्चे व ज्ञानदीप के प्रबन्धक तथा नृत्य की मुद्रा में कविता द्विवेदी।।

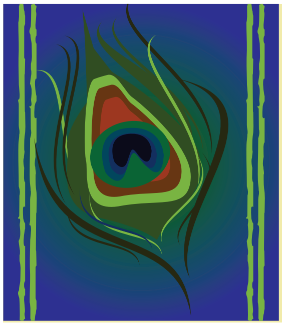

हिन्दी को राष्ट्र भाषा का सम्मान दिलाना जरूरी : डा. सुरेश

- **कार्यक्रम विषयः** 'हिन्दी काव्य गायन प्रतियोगिता'
- **दिनांकः** 20 सितम्वर, 2008 • **समयः** अपरान्ह 1 बजे से 4:00 बजे
  स्थानः ज्ञानदीप सी.सैके. पब्लिक स्कूल, शिकोहाबाद
- **संयोजनः शब्दम्**

प्रतियोगिता में छात्र–छात्राओं ने भावपूर्ण रोचक शैली में सूर,तुलसी, मीरा, मैथिलीशरण गुप्त, गोपालदास नीरज आदि कवियों व स्वरचित कविताओं का गायन किया।

अध्यक्षीय संम्बोधन में हिंदी के विद्वान डा. सुरेश चन्द्र दुबे ने कहा कि हिन्दी की दशा दिन–प्रतिदिन राजनैतिक कारणों से खराब होती चली गयी। अतः हिन्दी को राष्ट्र भाषा का सम्मान अभी तक नहीं मिला, यह बहुत ही दुख की बात है।

हिन्दी काव्य गायन प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में हिन्दी के विद्वान डा. चन्द्रवीर जैन, डा0 ध्रुवेन्द्र भदौरिया एवं मंज़रउल वासै थे। इस अवसर पर हिन्दी के विद्वान डा. सुरेश चन्द्र दुबे को शॉल एवं श्रीफल देकर राधेश्याम यादव व डा. रजनी यादव ने 'शब्दम्' की ओर से सम्मानित किया। डा. चन्द्रवीर जैन ने छात्रों को अपने काव्य सम्प्रेषण शैली में सुधार के लिए कुछ सूत्र बताये। डा. भदौरिया ने अशफाक उल्लाह पर स्वयं रचित कविता पाठ कर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। डा. रजनी यादव ने हिन्दी के प्रति रूझान पैदा करने के लिए सभी विद्वानों अतिथियों का स्वागत किया।

गोमती देवी कन्या इंटर कालेज–धातरी की कनिष्ठ वर्ग की अर्चना यादव को प्रथम पुरस्कार दिया गया। द्वितीय पुरस्कार ज्ञानदीप के छात्र आयुष्मान ने, तृतीय पुरस्कार कु. स्वेच्छा ने प्राप्त किया। वरिष्ठ वर्ग में प्रथम पुरस्कार विमको राठौर, राजकीय महिला विद्यालय–सिरसागंज ने प्राप्त किया। अंजू यादव, मनाली अग्रवाल ज्ञानदीप ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया। संचालन शशिकान्त पांडेय ने किया। इस अवसर पर पं. उमाशंकर शर्मा, सुरेशचन्द्र दुबे, राधेश्याम यादव, डा. रजनी यादव ने विजेता प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र दिए।

गिरीश फलक

हिन्दी का उत्थान हो, शब्दम् का संदेश ।
शब्दम् की पूजा करें, ब्रह्मा विष्णु महेश ।।

शब्दम् का चतुर्थ स्थापना दिवस

- **कार्यक्रम विषयः** 'चतुर्थ स्थापना दिवस'
- **दिनांकः** 17 नवम्बर, 2008 ● **समयः** अपरान्ह 2:30 बजे से 4:30 बजे
- **स्थानः** यंग स्कालर्स ऐकेडमी सीनियर सैकिण्डरी स्कूल, शिकोहाबाद
- **अध्यक्षताः** श्रीमती किरण बजाज ● **मुख्य अतिथिः** श्री उदय प्रताप सिंह ● **संचालनः** मंज़रउल वासै
  संयोजनः शब्दम्

''राष्ट्रभाषा हिंदी की उन्नति में 'शब्दम्' की अहम भूमिका रही है। हम राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति अपने दायित्य को भूल गये हैं । इस संबंध में 'शब्दम्' संस्था विभिन्न कालेजों और स्कूलों में लेख, कविता, कहानी, प्रश्नमंच, सामन्य ज्ञान आदि प्रतियोगिताएं आयोजित कर रही है। इससे प्रतिस्पर्धा और अभिव्यक्ति बढ़ेगी।''

ये उद्‌गार राज्यसभा के पूर्व सांसद उदय प्रताप सिंह ने 'शब्दम्' के चतुर्थ स्थापना दिवस पर यंग स्कालर्स ऐकेडमी के सभागार में आयोजित समारोह में बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये । उन्होंने स्वीकार किया कि समाजवादी पार्टी और भारतीय जनता पार्टी ऐसे दल हैं जो हिंदी के संसद में प्रयोग और उन्नति पर जोर देते रहे हैं । श्री सिंह ने कहा कि दो हिंदी जानने वाले विदेशी भाषा में बात करें तो उन्हें दंडित किया जाए ।

मंचासीन (बांये से) श्री उमाशंकर शर्मा, श्री उदय प्रताप सिंह, श्रीमती किरण बजाज एवं डा0 ए0के0 आहूजा।

इससे पूर्व ऐकेडमी की छात्राओं ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की और मुख्य अतिथि ने सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया । इस अवसर पर यंग स्कालर्स के प्रबंधक डा. ए.के. आहूजा ने एकेडमी की ओर से स्मृति चिन्ह भेंट कर मुख्य अतिथि का स्वागत किया। 'शब्दम्' अध्यक्ष किरण बजाज ने मुख्य अतिथि श्री उदय प्रताप सिंह का शॉल और हरित कलश भेंट कर स्वागत किया। कार्यक्रम में 'शब्दम्' द्वारा विभिन्न स्कूलों कालेजों के स्तर पर कराई गई विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी छात्र–छात्राओं को मुख्य अतिथि ने पुरस्कार प्रदान किए । साथ ही किरण बजाज एवं श्री उदय प्रताप सिंह ने डा. ध्रुवेन्द्र भदौरिया की पचासवीं वर्षगांठ पर प्रकाशित स्मारिका 'ध्रुव से ध्रुवेन्द्र तक' का भी विमोचन किया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में किरण बजाज ने 'शब्दम्' की गत वर्ष की गतिविधियों पर सन्तोष व्यक्त किया। उन्होंने जहां एक ओर शब्दम्' से प्रारम्भ से ही जुड़े प्रो. नन्दलाल पाठक, मुकुल उपाध्याय, शेखर बजाज की 'शब्दम्' को देन को रेखांकित किया, वहीं चतुर्थ स्थापना दिवस के मुख्य अतिथि उदय प्रताप सिंह का आभार व्यक्त किया। उन्होंने नयी पीढ़ी का आह्वान किया कि वे हिन्दी भाषा को सर्वोच्च स्थान दिलाकर उसे राष्ट्र भाषा का सम्मान दिलाएं ।

छात्र–छात्राओं को उन्होंने कम्प्यूटर विज्ञान में विशेष रुचि लेने और हिन्दी कम्प्यूटर टायपिंग में विशेष योग्यता प्राप्त करने का सन्देश दिया ।

सरस्वती वन्दना प्रस्तुत करती यंग स्कालर्स स्कूल की छात्रायें।

श्री उदय प्रताप सिंह की कुछ कविताएं

सरस्वती चित्र के सामने दीपप्रज्वलित करते श्रीमती किरण बजाज, श्री उदयप्रताप सिंह व डा0 महेश आलोक।

श्री उदय प्रताप सिंह

सुप्रसिद्ध कवि, लेखक। लोकसभा, राज्यसभा एवं राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग के पूर्व सदस्य। सांसद के रूप में भारत सरकार की विभिन्न राजभाषा समितियों के सदस्य। 1993 में तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन के भारतीय दल के अध्यक्ष तथा 'पेरामारीबू' विश्वविद्यालय द्वारा आचार्य की मानद उपाधि। शिवमंगल सिंह सुमन, ब्रजविभूषण, शायरे इमज़हती आदि पुरस्कारों से सम्मानित। उ0प्र0 सरकार के प्रतिष्ठित सम्मान 'यश भारती' से सम्मानित। शब्दम् की ओर से 'वरिष्ठ हिन्दी सेवी सम्मान'। विश्व के 18 देशों में हिन्दी का प्रचार–प्रसार।

राष्ट्रीय विचारधारा के उद्घोषक कवि। भाषा, कथन और शैली विचारपरक एवं बोलचाल तथा अपनापन लिए हुये।

प्रवक्ता एवं प्राचार्य के पद पर कार्य करते हुए एक आदर्श शिक्षक के रूप में ख्याति। छात्रों में नैतिक मूल्यों का संवर्धन एवं अनुशासनप्रियता का संचालन।

स्वभाव मधुर एवं आकर्षक। राजनीति के क्षेत्र में दलगत सीमाओं को तोड़ कर प्रत्येक दल के राजनेता व्यक्तिगत स्तर पर इनके प्रशंसक एवं मित्र।

ग़ज़ल

इन ढालों के दुर्गम पथ पर देखे रोज़ फिसलते लोग
फिर कैसे शिखरों तक पहुँचे बैसाखी पर चलते लोग।।
आलीशान इबादत–ख़ाने लेकिन इनमें आये कौन ?
दहशत के मौसम में अपने घर से नहीं निकलते लोग।।
हम हैं राही प्रेम डगर के बाज न आयें मर कर भी
दुनियां वाले कहते ठोकर खाकर प्रायः संभलते लोग।।
औरों की पीड़ा से गौतम हरगिज बुद्ध नहीं होते
यदि वैभव की चकाचौंध के मारे कहीं बदलते लोग।।
कर्म बड़ा तो जाति बड़ी है मानो ''उदय'' हमारी बात
वर्ना तुम जैसे सड़कों पर मिलते बहुत टहलते लोग।।

छन्द

मैं तो हंसवाहिनी के द्वार का हूँ द्वारपाल
पलकों से शारदा की सीढ़ियाँ बुहारता
सीधी सादी ज़िन्दगी व्यतीत करता हूँ मौन
कोठी, कार, पद, के लिए नहीं गुहारता
इस पे भी शंका, यदि साफ साफ सुनिये, मैं
लक्ष्मी के वाहनों को क्यों नहीं जुहारता
अन्धा मैं अँधेरे में, उजाले में वे सूरदास
वे मुझे निहारते न मैं उन्हें निहारता ।।

पाकिस्तान के नाम

अहसान फ़रामोशो सोचो क्या हमने तुमको दिया नहीं
ऐसा उपकार कौन सा है जो हमने तुम पर किया नहीं?

आजादी की देवी का मुँह माँगा मोल दिया तुमको
माँ के लोहू से सराबोर घायल भूगोल दिया तुमको।

इतनी अपनी मजबूरी थी इतिहास नहीं देने पाये
अविभाज्य शौर्य होता है ये विश्वास नहीं देने पाये।

० ० ०

ये कश्मीर हम दे भी दें तो ताजमहल माँगोगे तुम
पूनम की रातों में यमुना का हुस्ने ग़ज़ल माँगोगे तुम।

फिर सबसे अच्छे गुलशन की बुलबुल की सदाएँ माँगोगे
जो रास रसूलों को आई वो ठंडी हवाएँ माँगोगे।

फिर इसी तरह के और बहुत से कौमी निशाँ माँगोगे तुम
सहगल के स्वर में ग़ालिब का अन्दाजे बयाँ माँगोगे तुम।

० ० ०

रसखान सुकवि था मुसलमान क्या उसका कान्हा भी देदें
क्या बाजबहादुर रूपमती का मधुर तराना भी देदें।

० ० ०

इसलिए तुम्हें समझाते हैं मत काश्मीर पर ललचाओ
अगली पीढ़ी का स्वर समझो अपनी जनता को समझाओ।

अब जिसे देखकर रोते हो वह सब उत्कर्ष तुम्हारा था
ये केवल काश्मीर ही क्या सब भारतवर्ष तुम्हारा था।

पहले से त्रस्त मनुजता को मत और युद्ध से त्रस्त करो
कुछ और प्रश्न भी हैं जिन पर जनमत का बन्दोबस्त करो।

खेतों की मुलायम धरती पर हल–बैल चलेगें या गोली
फ़सलों को गिराएगी फौजें या हंसियों की हंसती टोली।

० ० ०

इस लिए तुम्हें समझाते हैं मत कश्मीर पर ललचाओ
अगली पीढ़ी का स्वर समझो अपनी जनता को समझाओ।

ग़ज़ल

चार यादें हैं तुम्हारी ज़िन्दगी भर को बहुत हैं
और फिर उनकी शुमारी ज़िन्दगी भर को बहुत है।

चांद कहता है कलंकित भाल दुनिया को दिखाकर
एक ही ग़लती हमारी ज़िन्दगी भर को बहुत है।

हम न आयेंगे यहां पर रोज़ ऐ साकी पिला दे
ऐसी मय जिसकी ख़ुमारी ज़िन्दगी भर को बहुत है।

एक मामूली क़लम देकर 'उदय' की उंगलियों में
भाग्य बोला लो तुम्हारी ज़िन्दगी भर को बहुत है।

नीरव उदासी

किरण बजाज

कहीं न कहीं
कुछ न कुछ
जरूर टूट गया
पता नहीं कब
मेरा ही मन
मुझसे रूठ गया

चुभ गये इतने
काँटे कि दर्द
नहीं अब बाकी है,
कोई शिकायत भी नहीं
बस,अजीब उदासी है

अब नहीं किसी से कुछ कहने
या बताने का मन करता है
आपबीती चुपचाप खुद ही
मिटाने का मन करता है।

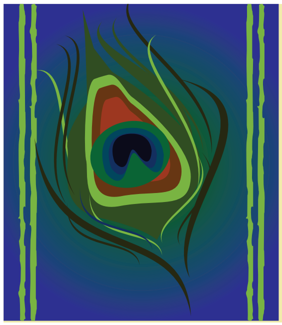

शब्दम् सलाहकार समिति के सम्मानित सदस्यों का संक्षिप्त परिचय

श्री उमाशंकर शर्मा

आगरा विश्वविद्यालय से स्नातक एवं शासकीय रचनात्मक प्रशिक्षण महाविद्यालय, लखनऊ से दो वर्षीय एल.टी प्रशिक्षण। साहित्य और विशेष रूप से हिंदी से विशेष लगाव। परिवारों के विश्रृंखलित होने के इस युग में सफल संयुक्त परिवार चलाना उनकी महती उपलब्धि है। 'शब्दम्' की स्थापना काल से ही उससे जुड़े हैं ।

डा0 ए0के0 आहूजा

एम0बी0बी0एस0। नगर के वरिष्ठ चिकित्सक। चिकित्सा क्षेत्र में पर्याप्त उन्नति करने के साथ ही सामाजिक क्षेत्र में पैठ। नगर में यंग स्कालर्स एकेडेमी तथा इण्डियन इंस्टीटयूट आफ मैनेजमेण्ट एण्ड टेकनालाजी के स्थापक। सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में रुचि का एक प्रमाण यह है कि यंग स्कालर्स एकेडेमी में ऐसे कार्यक्रमों के लिए एक विशाल सभागार बनवाया है। कई सामाजिक संगठनों से संबध्द।

डा0 महेश आलोक

हिन्दी साहित्य से स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त कर जे0एन0 विश्वविद्यालय से एम0फिल एवं हिन्दी के वरिष्ठ एवं समर्थ कवि डा0 केदारनाथ सिंह के संरक्षण में पीएच0 डी0 की उपाधि प्राप्त। हिन्दी के श्रेष्ठ विद्वान होने के साथ ही श्रेष्ठ कवि भी। देश के बड़े से बड़े साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं में कविताओं का प्रकाशन । लेख, कला, संगीत, रंगमंच, फिल्म आदि क्षेत्रों में भी समीक्षाएं प्रकाशित। कविताएं मराठी, उर्दू एवं पंजाबी भाषाओं में अनुवादित। समकालीन भारतीय साहित्य, पाश्चात्य काव्य शास्त्र, मध्यकालीन साहित्य, नयी कविता आदि विषयों पर कई पुस्तकें या तो प्रकाशित हो चुकी हैं या प्रकाशनाधीन हैं ।

श्री मंज़रउल वासै

अंग्रेजी साहित्य, हिन्दी साहित्य एवं दर्शनशास्त्र से स्नातकोत्तर उपाधियां। हिन्दी साहित्य से विशेष प्रेम। सौ से अधिक निबन्ध विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित एवं विभिन्न स्तरों से पुरस्कृत हो चुके हैं । भाषा विज्ञान में विशेष रुचि है। गांधीवादी विचारधारा उन्हें अपने पिता और पितामह से उत्तराधिकार में मिली है। हिन्दी प्रश्नमंच कार्यक्रमों के सफल संचालक एवं विशेषज्ञ ।

डा. (श्रीमती) रजनी यादव

राजनीतिशास्त्र एवं समाजशास्त्र से स्नातकोत्तर उपधियां एवं समाजशास्त्र में डाक्टरेट की उपाधि। इसके अतिरिक्त विधि स्नातक (एल.एल.बी)। नगर के अग्रणी विद्यालय ज्ञानदीप सी0सैके0 पब्लिक विद्यालय, शिकोहाबाद की निदेशक–प्राचार्या। साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए तन–मन–धन से सदैव तत्पर। 'शब्दम्' एवं 'पर्यावरण मित्र' के व्यावहारिक कार्यान्वयन में संलग्न।

डा0 ध्रुवेन्द्र भदौरिया

आयुर्वेद स्नातक। वेद, उपनिषद, दर्शन के गहन अध्येता। पुराण, महाभारत, रामायण के प्रेरक प्रसंगों पर आधुनिक दृष्टि से काव्य सृजन। कवि सम्मेलनों में वीर रस तथा आध्यात्मिक कवि के रूप में संम्पूर्ण भारत तथा नेपाल में काव्य पाठ। मंच के श्रेष्ठ संचालकों में गणना। भारत, नेपाल, मारीशस की पत्र–पत्रिकाओं में कविता,निबन्ध एवं समीक्षाओं का प्रकाशन। सात काव्य ग्रन्थों का प्रकाशन। देश के अनेक प्रतिष्ठित सम्मानों से अलंकृत।

कार्यालय सहायक
अभय दीक्षित
शशिकांत पाण्डे

शब्दम्, हिंद लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद – 205141. फोन: (05676)234501/503
ई–मेल: hindlamps@sify.com

मुझे यह नहीं बर्दाश्त होगा कि हिन्दुस्तान का एक भी आदमी अपनी मातृभाषा को भूल जाए, उसकी हंसी उड़ाए, उससे शरमाए या उसे ऐसा लगे कि वह अपने अच्छे-से- अच्छे विचार अपनी भाषा में नही रख सकता।

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हिंदी ईमान की भाषा है राष्ट्रीय एकता की भाषा है और आजादी की भाषा है यह सब ताकत हिंदी में प्रकट करने की जिम्मेदारी हमारी है.

अमेरिका के राष्ट्रपति और भारतीय भाषाएं

भारत सरकार भोजपुरी व हरियाणवी जैसी क्षेत्रीय भाषाओं को अबतक संविधान में शामिल नहीं करा पाई है, लेकिन अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा ने सरकारी आवेदन पत्र में हजारों राजनीतिक पदों के लिए बीस भारतीय भाषाओं को शामिल किया है।

'अंतर्राष्ट्रीय अनुभव' के अंतर्गत आवेदनकर्ताओं को इन भाषाओं में से चुनना है जिनका उन्हें ज्ञान है। आवेदनपत्र में उल्लेखित २० भारतीय भाषाओं में छ.-अवधी, भोजपुरी, छत्तीसगढ़ी हरियाणवी, मगधी और मारवाड़ी ऐसी हैं जो भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं है।

आवेदन पत्र में उल्लिखित अन्य भारतीय भाषाएं हैं-असमिया, बंगाली, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, मैथिली, मलयालम, नेपाली, मराठी, उड़िया, पंजाबी, सिंधी, तमिल, तेलुगू और उर्दू।

यह केवल भारतीय भाषाओं के लिए उत्साहवर्धक समाचार ही नहीं है बल्कि इसे हम एक दिशा निर्देश के रूप में भी ले सकते हैं।

हिन्दी के लिए
हम क्या कर सकते हैं

● हिन्दी को देश–विदेश में राष्ट्रभाषा का पूर्ण सम्मान दें।

● हम परस्पर हिन्दी बोलें, सीखें,और पढ़ें।

● अपने गाँव, कॉलौनी एवं शहर में हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं जैसे – निबन्ध, कहानी, नाटक, कविता, वाद–विवाद आदि को प्रोत्साहन एवं योगदान दें।

● अपने कारोबार में हिन्दी भाषा को सम्मान और स्थान दें।

● साहित्यिक आयोजनों में भाग लें एवं सहयोग दें।

● हिन्दी शिक्षकों, लेखकों, कवियों, रचनाकारों, कलाकारों को प्रोत्साहित करें।

● हिन्दी पुस्तकों की प्रदर्शनी, वाचनालय, मुद्रण, विक्रय को बढ़ावा दें।

● विश्व के उत्कृष्ट साहित्य का अनुवाद हिन्दी में एवं हिन्दी साहित्य का अनुवाद अन्य भारतीय भाषाओं तथा विदेशी भाषाओं में कराने में सहयोग करें।

आपके सहयोग, सुझाव एवं योगदान के लिए हम सदैव कृतज्ञ रहेंगे।

“

अगर स्वराज्य करोड़ों भूखे
मरने वालों, करोड़ों
निरक्षरों, निरक्षर बहनों, दलितों
व अंत्यजों का हो और इन सबके
लिए होने वाला हो,
तो हिंदी ही एकमात्र भाषा हो
सकती है.

”

– महात्मा गांधी
नवजीवन–२१.६.१९३१

बजाज
सौजन्य:बजाज इलैक्ट्रिकल्स लि.